कैप्सूल 01

दृष्टि The Vision

# मेन्स कैप्सूल सीरीज़

प्रश्नपत्र–I

# भारत एवं विश्व का इतिहास, भूगोल एवं भारतीय समाज

द्वितीय संस्करण

IAS/PCS की मुख्य परीक्षा के संपूर्ण पाठ्यक्रम का प्रश्नोत्तर शैली में कवरेज

अब घर बैठे कीजिये आई.ए.एस. की तैयारी क्योंकि हम आ रहे हैं आपके घर

दृष्टि The Vision

# हिंदी साहित्य

## द्वारा- डॉ. विकास दिव्यकीर्ति

**मोड : ऑनलाइन / पेन ड्राइव**

IAS परीक्षा में सर्वाधिक अंकदायी वैकल्पिक विषय 'हिंदी साहित्य' पढ़िये सिविल सेवा जगत के सबसे लोकप्रिय शिक्षक डॉ. विकास दिव्यकीर्ति से। इस कोर्स में शामिल हैं 157 रोचक कक्षाएँ, जिनमें IAS का संपूर्ण पाठ्यक्रम एकदम आधारभूत स्तर से शुरू करते हुए पढ़ाया गया है। इन कक्षाओं को गंभीरता से करने और क्लास नोट्स (जो आपके पास भेजे जाएंगे) को पढ़ने के बाद आपको कुछ भी अतिरिक्त करने की आवश्यकता नहीं होगी। इन कक्षाओं से परीक्षा की तैयारी तो होगी ही, साथ ही जीवन के प्रति सुलझा हुआ नज़रिया भी विकसित होगा।

यह कोर्स ऑनलाइन मोड (ऐप) के अलावा पेन ड्राइव मोड में भी उपलब्ध है। यदि आप इंटरनेट नेटवर्क की कमी या किसी अन्य कारण से यह कोर्स मोबाइल फोन की बजाय लैपटॉप/कंप्यूटर पर करना चाहते हैं तो कृपया ऐप के होम पेज पर जाकर पेनड्राइव कोर्स की टैब पर क्लिक करें।

## एडमिशन प्रारंभ

कक्षाओं की गुणवत्ता को परखने के लिये डेमो वीडियोज़ हमारे यूट्यूब चैनल **Drishti IAS** की प्लेलिस्ट **Online Courses** में देखें

ऑनलाइन कोर्स से जुड़ी हर जानकारी के लिये हमारी वेबसाइट **www.drishtiias.com** या **Drishti Learning App** पर **FAQs** पेज देखें

**इस कोर्स से संबंधित किसी भी अतिरिक्त जानकारी के लिये 9311406440-41 नंबर पर सीधे बात या मैसेज करें**

### हिंदी साहित्य : कोर्स की विशेषताएँ

1. UPSC के पाठ्यक्रम के लिए 400+ घंटे की कक्षाएँ।
2. UPPCS एवं BPSC के विशिष्ट टॉपिक्स के लिये 30-30 घंटे की पृथक कक्षाएँ।
3. प्रत्येक कक्षा को 3 बार देखने की सुविधा, ताकि आप टॉपिक को पढ़ने के बाद रिवीज़न भी कर सकें।
4. हर क्लास में उस टॉपिक से IAS, PCS में पूछे गए और अन्य संभावित प्रश्नों का विस्तृत अभ्यास।
5. स्टेट-ऑफ-द-आर्ट कैमरा और साउंड क्वालिटी, जो क्लास के अनुभव को एकदम वास्तविक जैसा बनाती है।
6. पाठ्यक्रम की टेक्स्ट बुक्स व नोट्स भी इस कार्यक्रम में शामिल, जिनके अलावा किसी अन्य अध्ययन सामग्री की आवश्यकता नहीं।

**अधिक जानकारी के लिये अपने एंड्रॉयड फोन पर आज ही इंस्टॉल करें**

## Drishti Learning App

दृष्टि आई.ए.एस. (दिल्ली) :
641, प्रथम तल, डॉ. मुखर्जी नगर, दिल्ली-09
☎ 87501 87501

दृष्टि आई.ए.एस. (प्रयागराज) :
ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज
☎ 87501 87501

दृष्टि The Vision

## मेन्स कैप्सूल सीरीज़

### प्रश्नपत्र-I

# भारत एवं विश्व का इतिहास, भूगोल एवं भारतीय समाज

**द्वितीय संस्करण**

Drishti Publications

dp

**दृष्टि पब्लिकेशन्स**

**641, प्रथम तल, डॉ. मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009**
**दूरभाष:** 011-47532596, 87501 87501
**Website:** www.drishtiias.com
**E-mail :** booksteam@groupdrishti.com

*शीर्षक : भारत एवं विश्व का इतिहास, भूगोल एवं भारतीय समाज*

*लेखक : टीम दृष्टि*

**द्वितीय संस्करण : मार्च 2021**

**मूल्य : ₹ 270**

**ISBN : 978-81-950940-5-9**

***प्रकाशक***

***VDK Publications Pvt. Ltd.***
***(दृष्टि पब्लिकेशन्स)***
*641, प्रथम तल,*
*डॉ. मुखर्जी नगर,*
*दिल्ली-110009*

## *विधिक घोषणाएँ*

* इस पुस्तक में प्रकाशित सूचनाएँ, समाचार, ज्ञान एवं तथ्य पूरी तरह से सत्यापित किये गए हैं। फिर भी, यदि कोई जानकारी या तथ्य गलत प्रकाशित हो गया हो तो प्रकाशक, संपादक या मुद्रक उससे किसी व्यक्ति-विशेष या संस्था को पहुँची क्षति के लिये ज़िम्मेदार नहीं है।

* हम विश्वास करते हैं कि इस पुस्तक में छपी सामग्री लेखकों द्वारा मौलिक रूप से लिखी गई है। अगर कॉपीराइट उल्लंघन का कोई मामला सामने आता है तो प्रकाशक को ज़िम्मेदार नहीं ठहराया जाएगा।

* सभी विवादों का निपटारा दिल्ली न्यायिक क्षेत्र में होगा।

* **© कॉपीराइट :** दृष्टि पब्लिकेशन्स (A Unit of VDK Publications Pvt. Ltd.), सर्वाधिकार सुरक्षित। इस प्रकाशन के किसी भी अंश का प्रकाशन अथवा उपयोग, प्रतिलिपीकरण, ऐसे यंत्र में भंडारण जिससे इसे पुनः प्राप्त किया जा सकता हो या स्थानान्तरण, किसी भी रूप में या किसी भी विधि से (इलेक्ट्रॉनिक, यांत्रिक, फोटो-प्रतिलिपि, रिकॉर्डिंग या किसी अन्य प्रकार से) प्रकाशक की पूर्वानुमति के बिना नहीं किया जा सकता।

* एम.पी. प्रिंटर्स, बी-220, फेज़-2, नोएडा (उत्तर प्रदेश) से मुद्रित।

# दो शब्द

**प्रिय पाठको,**

मुख्य परीक्षा के महत्त्व से आप लोग भली-भाँति परिचित हैं ही। प्रारंभिक परीक्षा की भूमिका इस रूप में जरूर होती है कि हम सफलता की दौड़ में शामिल हो जाते हैं, लेकिन इस दौड़ का परिणाम इस पर निर्भर करता है कि हम मुख्य परीक्षा में कैसा प्रदर्शन करते हैं। इसमें बेहतर करने से न केवल हम सफलता के बेहद नज़दीक पहुँच जाते हैं बल्कि रैंक निर्धारण में भी इसकी भूमिका सर्वाधिक प्रभावी हो जाती है। इसलिये यह कहना कोई अतिशयोक्ति नहीं कि मुख्य परीक्षा में बेहतर प्रदर्शन और सिविल सेवा में चयन लगभग एक ही अर्थ रखते हैं। इसी उद्देश्य को साधने हेतु हम अब 'मेन्स कैप्सूल सीरीज़' के साथ आपके समक्ष प्रस्तुत हैं। इसके पहले जब हमने 'प्रिलिम्स प्रैक्टिस सीरीज़' शुरू की थी तो इसे आप पाठकों का अपार स्नेह प्राप्त हुआ। साथ ही अनेक पाठकों का निवेदन भी प्राप्त हुआ कि इसी तर्ज़ पर हम मुख्य परीक्षा पर भी सामग्री उपलब्ध कराएँ। हमारी टीम पहले से इस दिशा में कार्य कर भी रही थी और अब यह मूर्त रूप में आपके समक्ष उपस्थित है। हम इस सीरीज़ की कुछ बुनियादी बातों को आपसे साझा करना चाहेंगे और फिर विशिष्ट रूप से इस पुस्तक की चर्चा करेंगे।

इस सीरीज़ में कुल पाँच पुस्तकें होंगी जिनमें से पहली चार क्रमश: सामान्य अध्ययन के चारों प्रश्नपत्र को संपूर्णता से कवर करेंगी। इसका अर्थ यह हुआ कि प्रत्येक प्रश्नपत्र के लिये एक पृथक् पुस्तक होगी। साथ ही, सीरीज़ की पाँचवीं कड़ी मुख्य परीक्षा की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण वर्ष भर के करेंट अफेयर्स को कवर करेगी। इसे हमने प्रश्नोत्तर शैली में तैयार किया है। अब, आपके मन में यह सवाल उठ सकता है कि इन विषयों पर तो पहले से बहुत सामग्री है फिर इस सीरीज़ में खास क्या है? तो, ठीक बात है कि इन पर सामग्री की कोई कमी नहीं है लेकिन इन उपलब्ध सामग्रियों में जिस बात का घोर अभाव है वो यह कि ये ठीक तरीके से लक्ष्य को संबोधित नहीं हैं। आपको बात थोड़ी जटिल लग रही होगी, इसलिये इसकी थोड़ी और चर्चा करते हैं। दरअसल, मुख्य परीक्षा में सफलता मूलत: दो तत्त्वों पर निर्भर करती है : एक सटीक उत्तर लेखन कौशल और दूसरा पूरे पाठ्यक्रम को बार-बार रिवाइज़ करना। अब अगर आपके पास ऐसी सामग्री नहीं है जो पूरे पाठ्यक्रम को प्रश्नोत्तर शैली में प्रस्तुत करती हो तो आपके लिये बहुत मुश्किल है कि आप पढ़े हुए पाठ का सही उत्तर लिख पाएंगे। साथ ही बार-बार रिवाइज़ करने के लिये आवश्यक है कि सामग्री बहुत विस्तृत और बिखरी हुई न हो। इन्हीं दोनों चुनौतियों से पार पाने के लिये हमने 'मेन्स कैप्सूल सीरीज़' को शुरू किया है, ताकि प्रश्नोत्तर शैली में आप पूरे पाठ्यक्रम को देख सकें और संक्षिप्त व सटीक सामग्री को परीक्षा के पहले कई बार दुहरा सकें।

इस सीरीज़ की पहली कड़ी के रूप में 'भारत एवं विश्व का इतिहास, भूगोल एवं भारतीय समाज' प्रस्तुत है। इस प्रश्नपत्र में हमने इस बात का विशेष ध्यान रखा है कि जो खंड परीक्षा के लिहाज से अधिक महत्त्वपूर्ण हैं और जिनसे अधिक प्रश्न पूछने का चलन रहा है, उनसे अधिकाधिक प्रश्न शामिल किये जाएँ। जब आप इसे पढ़ेंगे तो इस कसौटी का ठीक से अनुभव कर पाएंगे। खासकर भारतीय विरासत और संस्कृति के खंड में हमारी कोशिश यही रही है कि इस विस्तृत क्षेत्र को इस रूप में समेट लें कि कोई भी महत्त्वपूर्ण हिस्सा न छूटे और पाठ अव्यावहारिक विस्तार भी न पाए। इसी प्रकार विश्व इतिहास और भारतीय समाज के खंड को हमने इस रूप में ढाला है कि प्रश्नोत्तर के माध्यम से ही आप पूरे पाठ्यक्रम को तैयार कर पाएंगे। प्रश्नोत्तर शैली में एक चुनौती यह भी थी कि प्रश्नों को किस प्रकार से आकार दिया जाए कि वे यूपीएससी के मानक के अनुकूल भी हों और पाठ्यक्रम भी संपूर्णता में शामिल हो जाए। हमारी टीम, जिनके सभी सदस्य इस परीक्षा का लंबा अनुभव रखते हैं, ने इस चुनौती को स्वीकार किया और फिर अंतत: एक कामयाब संतुलन साधा जा सका। पुस्तक से गुजरते हुए आप इसका परीक्षण कर सकते हैं। इस सीरीज़ से आपको एक लाभ यह भी होगा कि आप अपने उत्तर लेखन की कला को बेहतर बना पाएंगे। सीमित शब्दों में कैसे पूरी बात कही जा सकती है, इसे सीखने में यह पुस्तक आपकी पूरी मदद करेगी।

अत: आप निश्चिंत होकर इसे पढ़ें और अपने लक्ष्य की ओर कदम बढ़ाएँ। पुस्तक को लेकर आपका अनुभव कैसा रहा, यह भी हमसे साझा करें। आपकी प्रतिक्रिया हमारे लिये दर्पण की तरह है। आप **अपनी बात बेझिझक '8130392355' नंबर पर वाट्सएप मैसेज से भेज दें।** आपकी टिप्पणियों के आधार पर हम पुस्तक के आगामी संस्करणों को और बेहतर बना सकेंगे।

**शुभकामनाओं सहित**
**प्रधान संपादक**
**दृष्टि पब्लिकेशन्स**

# अनुक्रम

**खंड-1 ........................................ 1-125**

भारतीय विरासत एवं संस्कृति

आधुनिक भारत का इतिहास (स्वतंत्रता से पूर्व)

आधुनिक भारत का इतिहास (स्वतंत्रता के पश्चात्)

विश्व इतिहास

**खंड-2 ........................................ 127-190**

भारतीय समाज एवं सामाजिक मुद्दे

**खंड-3 ........................................ 191-268**

भारत एवं विश्व का भूगोल

# सामान्य अध्ययन

## प्रश्नपत्र-I

## खंड-1

### भारतीय विरासत एवं संस्कृति

**शैलकृत स्थापत्य प्रारंभिक भारतीय कला एवं इतिहास के ज्ञान के अति महत्त्वपूर्ण स्रोतों में से एक का प्रतिनिधित्व करता है। विवेचना कीजिये। (150 शब्द, 10 अंक)**

**The rock-cut architecture represents one of the most important sources of our knowledge of early Indian art and history. Discuss.**

**उत्तर:** प्रारंभिक भारतीय कला एवं इतिहास को जानने के लिये उपयोगी सामग्रियों को दो भागों में बाँटा जाता है- 1. पुरातात्विक स्रोत, 2. साहित्यिक स्रोत।

शैलकृत स्थापत्य एक पुरातात्विक स्रोत सामग्री है जो प्रागैतिहासिक काल से ही मिलने लगती है। उच्चपुरापाषाण कालीन प्राकृतिक गुफाओं जैसे भीमबेटका में बनाए गए चित्र उस समय के पशु-पक्षियों, मानव समुदाय और रीति-रिवाजों की जानकारी देते हैं।

वस्तुत: पहाड़ को काटकर गुफा निर्मित करने का प्रथम उदाहरण अशोक काल का मिलता है जिससे न केवल उस समय के विकसित स्थापत्य कला का पता चलता है बल्कि गुफा काटने की तकनीक के विकास का भी ज्ञान होता है। बराबर की पहाड़ियों में बनाई गई ये गुफाएँ आजीवक संप्रदाय को दान में दी गई थीं जो अशोक की धार्मिक सहिष्णुता का परिचय भी देती हैं।

मौर्योत्तर काल में आकर गुफा स्थापत्य और विकसित हुआ तथा उसमें चैत्य और स्तूप बनाए जाने लगे। पश्चिमी घाट की पहाड़ियों में बने इन चैत्य गुहा मंदिरों से तत्कालीन उच्च कला के विकास का पता चलता है। प्रारंभिक चैत्य गुहा मंदिर जहाँ अपनी बनावट में सादे हैं, जैसे-भज, वहीं बाद के कार्ले चैत्य गुहा मंदिर अपने अलंकृत स्थापत्य के लिये जाने जाते हैं। खारवेल के समय उदयगिरि पहाड़ियों में बनी रानीगुंफा गुहा जैन विहार है। इन गुफाओ में लिखे गए अभिलेखों से राजनीतिक घटनाओं का भी पता चलता है, जैसे हाथीगुंफा लेख।

अजंता के गुहा मंदिर मौर्योत्तर काल से लेकर गुप्त काल तक के विकास को दर्शाते हैं। इनमें मूर्तिकला और चित्रकला के भी सर्वश्रेष्ठ उदाहरण देखने को मिलते हैं। यानी शैलकृत स्थापत्यों से न केवल स्थापत्यगत विकास का ज्ञान होता है अपितु मूर्तिकला और चित्रकला के विकास और उनके विषय से विभिन्न धर्मों की ऐतिहासिक जानकारी प्राप्त होती है। अजंता गुहा में गुप्तकालीन चित्र ऐतिहासिकता और कलात्मकता दोनों दृष्टि से अति महत्त्वपूर्ण हैं। उदयगिरि पहाड़ियों की बाघ गुफा अपने धर्मनिरपेक्ष चित्र के लिये प्रसिद्ध है।

एलोरा में राष्ट्रकूटों द्वारा बनवाया गया कैलाश मंदिर शैलकृत स्थापत्य का अनन्य उदाहरण है जो हिन्दू धर्म के बढ़ते प्रभाव का द्योतक भी है। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि शैलकृत स्थापत्य से भारतीय प्रारंभिक इतिहास और कला दोनों की जानकारी मिलती है और ये इतिहास अध्ययन के महत्त्वपूर्ण स्रोत हैं।

**भारत में बौद्ध धर्म के इतिहास में पाल काल अति महत्त्वपूर्ण चरण है। विश्लेषण कीजिये। (150 शब्द, 10 अंक)**

**Pala period is the most significant phase in the history of Buddhism in India. Enumerate.**

**उत्तर:** पूर्वमध्यकाल यानी 800 ई. से 1200 ई. के दौरान भारत में बौद्धधर्म पतन की ओर अग्रसर होने लगा। उत्तर भारत में शैव मतावलंबी हूणों के आक्रमण से उसे आघात लगा तो दक्षिण भारत में शंकराचार्य ने ब्राह्मण धर्म को संगठित कर वाद-विवाद में बौद्धों को पराजित कर दिया।

इसी समय पतनोन्मुख बौद्ध धर्म को राजकीय संरक्षण पालवंशी शासकों ने प्रदान किया जिससे उसको भारत में नवजीवन मिला, इसीलिये पाल शासनकाल बौद्ध इतिहास में एक महत्त्वपूर्ण चरण बन जाता है।

सर्वप्रथम पालों के संरक्षण से बौद्ध धर्म की वज्रयान शाखा का विकास हुआ। वज्रयान शाखा वस्तुत: तंत्र-मंत्र पर आधारित चमत्कार द्वारा मोक्ष प्राप्ति पर बल देता था जो उत्तर-पूर्व में स्थानीय रूप से प्रचलित तंत्र-मंत्र पर आधारित था। बुद्ध की शिक्षाओं से आगे बढ़कर ब्राह्मणिक कर्मकांड को अब अपना लिया गया था।

पाल राजाओं धर्मपाल और देवपाल ने न केवल नालंदा विश्वविद्यालय को अपना संरक्षण प्रदान किया बल्कि विक्रमशिला, ओदंतपुरी और सोमपुर विश्वविद्यालय और अनेक बौद्ध विद्यालयों का निर्माण कर बौद्ध धर्म की शिक्षा और प्रसार में अपना अमूल्य योगदान दिया।

पाल शासकों ने बौद्ध-धर्म के प्रचार के लिये तिब्बत में आतिश दीपांकर के नेतृत्व में बौद्ध दल भेजा जिसने पूरे एशिया में तिब्बत से लेकर सुमात्रा तक बौद्ध-धर्म के महायान और वज्रयान शाखा का प्रचार किया।

पाल शासकों ने कला रूपों में भी बौद्ध धर्म को प्रश्रय दिया। धीमन और विधपाल क्रमश: धर्मपाल और देवपाल के काल में कांस्य एवं प्रस्तरमूर्तिकला के अग्रणी कलाकार थे। इस समय बुद्ध, बोधिसत्व, अवलोकितेश्वर, मंजूश्री, मैत्रेय आदि की मूर्तियाँ बनाई गईं। इनका निर्माण काले पत्थरों से किया गया जो अतिसुंदर और उत्कृष्ट कला की परिचायक

इस समय बनाए गए एकाश्म स्तंभों पर ईरानी धर्म एवं संस्कृति के प्रभावों को स्पष्ट तौर पर देखा जा सकता है। इस प्रकार देखा जाए तो मौर्य काल भारत में वस्तुकला एवं मूर्तिकला का दूसरा चरण माना जाता है जिसमें स्थानीय प्रभाव के साथ-साथ वैदेशिक प्रभाव भी विद्यमान था तथा यह किसी धर्म विशेष के लिये समर्पित न होकर सर्वधर्म समभाव पर आधारित थी। इस कला की उत्कृष्टता ही थी कि स्वतंत्र भारत ने अपना राजकीय चिह्न इसी कला से लिया।

**भक्ति एवं सूफी आंदोलन ने न केवल भारतीय समाज को मौलिक रूप से सशक्त बनाया, बल्कि इसने 'क्षेत्रीय साहित्य' के विकास को आवश्यक गति भी प्रदान की। टिप्पणी कीजिये। ( 150 शब्द ) 10**

**"The Bhakti and Sufi movements not only empowered the Indian society in fundamental ways but also provided the required impetus for the growth of vernacular literature". Comment.**

**उत्तर:** भक्ति एवं सूफी आंदोलनों का उद्भव मध्यकाल में भारत के विभिन्न भागों में हुआ। ये दोनों ही आंदोलन मूलत: ईश्वर से व्यक्ति के एकाकार होने के आध्यात्मिक दर्शन पर आधारित थे। इन दोनों ही आंदोलनों ने अपने-अपने क्षेत्र में प्रचलित रूढ़िवादी एवं रहस्यवादी प्रथाओं पर कटाक्ष किया तथा अंतर धार्मिक विरोध को नज़रअंदाज़ करते हुए सहिष्णुता पर बल दिया।

- सूफी एवं भक्ति संतों ने अपने विचारों के प्रसार के लिये परंपरागत भाषाओं जैसे संस्कृत, अरबी, फारसी का प्रयोग न करके स्थानीय भाषाओं का प्रयोग किया तथा हिन्दी, बंगाली, मराठी, तमिल, तेलुगू एवं मलयालम जैसी स्थानीय भाषाओं में रचनाएँ कीं तथा नि:संदेह ही क्षेत्रीय साहित्य एवं भाषाओं के विकास में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया।
- पूर्वी उत्तर प्रदेश में प्रमुख सूफी संतों, जैसे- 'चंदायन' के लेखक मुल्ला दाउद, तथा 'पद्मावत' के लेखक मलिक मोहम्मद जायसी ने अपने ग्रंथों को हिन्दी भाषा में लिखा तथा इनमें सूफी दर्शन को आसान भाषा में प्रस्तुत किया। जिसे आर्य जनमानस द्वारा आसानी से समझा जा सकता था।
- चैतन्य तथा चंद्रीदास ने बंगाली भाषा का प्रयोग श्री कृष्ण एवं राधा की प्रेम लीला को लिखने में किया।
- पंद्रहवी सदी में ब्रह्मपुत्र घाटी के प्रमुख भक्ति संत शंकरदेव द्वारा अपने विचारों एवं शिक्षाओं के प्रसार हेतु असमी भाषा का प्रयोग किया।
- इसी प्रकार कबीर, नानक तथा तुलसी दास जैसे संतों ने भी स्थानीय भाषा का प्रयोग अपने उपदेशों एवं रचनाओं में किया।
- इन क्षेत्रीय भाषाओं में लिखे गए काव्य, दोहे, सबद आदि वर्तमान समय में भी अत्यधिक प्रतिष्ठा प्राप्त किये हुए हैं जिन्होंने क्षेत्रीय भाषाओं को सम्मान दिलाने में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया।

इस प्रकार देखें तो भक्ति एवं सूफी संतों ने भारतीय समाज की परंपरागत रूढ़िवादी जड़ व्यवस्था पर प्रहार तो किया ही साथ में लोक भाषाओं के विकास में भी महत्त्वपूर्ण योगदान दिया। जिनकी शिक्षाएँ, रचनाएँ वर्तमान समय में भी उतनी ही प्रासंगिक हैं जितनी की मध्यकाल में थीं।

## आधुनिक भारत का इतिहास (स्वतंत्रता के पूर्व)

**लॉर्ड कर्जन की नीतियों एवं राष्ट्रीय आंदोलन पर उनके दूरगामी प्रभावों का मूल्यांकन कीजिये। (150 शब्द, 10 अंक)**

**Evaluate the policies of Lord Curzon and their long term implications on the national movement.**

**उत्तर:** भारत के वायसरॉय और गवर्नर जनरल के रूप में लॉर्ड कर्जन ने 1899 ई. से 1905 ई. तक अपनी सेवाएँ दीं। उनकी नीतियों से प्रतीत होता है कि वे एक साम्राज्यवादी प्रशासक थे। विदेश नीति में रूसी खतरे को रोकने के लिये लगातार अफगानिस्तान और ईरान में हस्तक्षेप करना तथा तिब्बत में यंग हस्बैंड मिशन भेजकर उसे अपने अनुकूल बनाना उनकी आक्रामक नीति का उदाहरण है।

घरेलू नीति में उन्होंने राष्ट्रीय आंदोलन के उभार को जिस तरह से रोकने का प्रयास किया उसने समूचे राष्ट्रीय आंदोलन को एक दिशा दे दी। सबसे पहले 1899 ई. में कलकत्ता नगर निगम में चुने गए सदस्यों की संख्या कम कर दी गई। इसके पश्चात् 1904 ई. में विश्वविद्यालय अधिनियम द्वारा सरकारी हस्तक्षेप बढ़ा दिया गया और विद्यालयों की संबद्धता का प्रश्न सरकारी अधिकारियों के हाथ में दे दिया गया। अभी राष्ट्रवादी इन नीतियों का समुचित विरोध कर पाते तभी 1905 ई. में बंगाल की बढ़ती राष्ट्रवादी ताकत को समाप्त करने के लिये उसके विभाजन की घोषणा कर दी गई।

बंगाल का विभाजन कुछ इस प्रकार किया गया कि आधुनिक भारतीय राजनीति में सांप्रदायिकता का आगाज हो गया यानि पूर्वी बंगाल मुस्लिम बहुल बनाया गया तथा लगातार सरकार की तरफ से सांप्रदायिक विभाजन और हिंसा को बढ़ावा दिया गया।

भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस ने बंगाल विभाजन का प्रतिरोध स्वदेशी और बहिष्कार आंदोलन चलाकर किया। यही स्वदेशी और बहिष्कार ने आगे गांधी जी के आंदोलन में भी अपनी भूमिका निभाई। स्वदेशी के तहत भारतीय उद्योगों की शुरुआत की गई, राष्ट्रीय कॉलेज बनाए गए, कला के क्षेत्र में भी प्राचीन और मध्यकालीन भारतीय कला से प्रेरणा ग्रहण की गई। यह पहला ऐसा आंदोलन था जो राष्ट्रीय छवि ग्रहण करता हुआ पूरे देश में फैल गया। इस आंदोलन में शहरी महिलाओं ने भी बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया तथा शहर और गाँव के गरीब लोगों की भी सीमित भागीदारी देखी गई।

यद्यपि 1908 ई. तक आते-आते स्वदेशी एवं बहिष्कार आंदोलन कमज़ोर पड़ने लगा लेकिन इसने भविष्य के राष्ट्रीय आंदोलन के लिये नींव तैयार कर दी। सर्वप्रथम आंदोलन की असफलता से निराश कुछ नवयुवकों ने व्यक्तिगत बहादुरी वाले क्रांतिकारी आतंकवाद का रास्ता पकड़ लिया। इसके अलावे इस आंदोलन ने नरमदलीय संवैधानिक राजनीति का खात्मा करके उग्र राष्ट्रीय आंदोलन का मार्ग प्रशस्त किया।

बाद में अपनी स्वीकृति वापस ले ली। कॉन्ग्रेस द्वारा संविधान सभा में शामिल होने और मुस्लिम लीग द्वारा अपनी स्वीकृति वापस ले लेने के कारण वायसराय ने लीग के प्रतिनिधित्व के बिना ही कार्यकारिणी का गठन कर लिया। वायसराय द्वारा उठाए गए इस कदम को अनुचित बताते हुए लीग ने 16 अगस्त, 1946 को 'प्रत्यक्ष कार्यवाही दिवस' का आह्वान किया जिसके कारण भारत को अब तक के सबसे भीषण सांप्रदायिक दंगों की त्रासदी को झेलना पड़ा।

**ब्रिटिश शोषणकारी आर्थिक नीतियों ने तत्कालीन भारतीय ग्रामीण अर्थव्यवस्था को ऋणग्रस्तता के कुचक्र में फँसा दिया, जिसके ग्रामीण समाज पर अनेक नकारात्मक प्रभाव पड़े। चर्चा कीजिये। (250 शब्द) 15**

**British exploitative economic policies entrapped the then Indian rural economy into a cycle of indebtedness, which had many negative effects on rural society. Discuss.**

**उत्तर:** अंग्रेज़ों के आगमन से पूर्व भारत के गाँवों में ऋणों का लेन-देन व सूदखोरी का व्यवसाय चलता रहता था, किंतु अंग्रेज़ी शासन के दौरान इसे एक नया आयाम व महत्त्व प्रदान किया गया, जिसके परिण ाामस्वरूप ग्रामीण ऋणग्रस्तता की स्थिति गंभीर हो गई।

ब्रिटिश नीतियों के तहत किसानों को अधिकाधिक ऋण लेने के लिये प्रेरित एवं बाध्य किया गया। नई भू-राजस्व नीतियों ने किसानो को खेतिहर मज़दूर में परिवर्तित कर दिया। अधिक भू-राजस्व दरों ने छोटे किसानों को ज़मींदारों से ऋण लेने को बाध्य कर दिया तथा ज़मींदार बहुत ही ऊँची दरों पर इन किसानों को ऋण वितरित करते थे। इस ऋण का प्रयोग किसान लगान को चुकाने में करता था। किंतु, किसी प्राकृतिक आपदा, जैसे- अकाल, बाढ़, सूखा अथवा महामारी की स्थिति में जब फसल को नुकसान होता था तो किसान इन ऋणों को चुकाने हेतु पुन: ऋण लेते थे। इस प्रकार इससे भारतीय कृषक एवं ग्रामीण अर्थव्यवस्था ऋणग्रस्तता के कुचक्र में फँसती चली गई, जिसने किसानों की स्थिति को अत्यंत दयनीय बना दिया।

## ग्रामीण ऋणग्रस्तता का कुचक्र

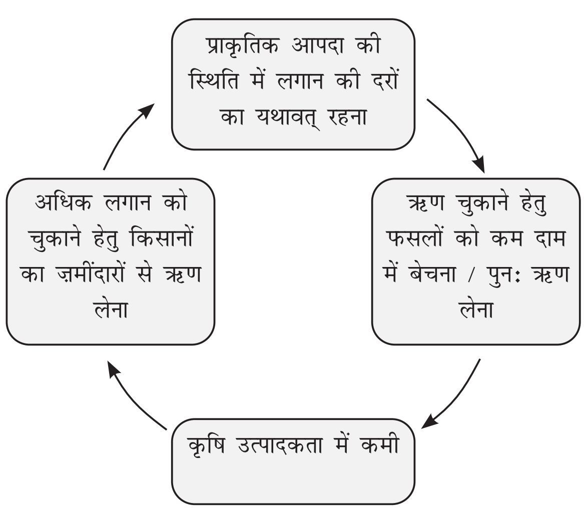


## ग्रामीण ऋणग्रस्तता के दुष्प्रभाव

- ग्रामीण ऋणग्रस्तता का सबसे प्रमुख दुष्प्रभाव यह हुआ कि खेती की ज़मीन कास्तकारों के हाथों से निकल गई और इस पर साहूकारों का कब्ज़ा हो गया। परिणामस्वरूप कृषि में दूरस्थ भू-स्वामियों का कब्ज़ा बढ़ता गया और किसानों की स्थिति महज़ खेत में काम करने वाले मज़दूर की होकर रह गई।
- साहूकारों एवं काश्तकारों के मध्य मनमुटाव बढ़ने से गाँवों में व्याप्त आपसी समझदारी और आत्मीयता की भावना समाप्त हो गई।
- गाँवों में साहूकारों तथा काश्तकारों के रूप में शोषक एवं शोषित, दो वर्गों का उदय हुआ। फलत: गाँवों में आर्थिक असमानता की खाई बढ़ती गई, जिसने भविष्य में अनेक संघर्षों को जन्म दिया।
- ग्रामीण ऋणग्रस्तता के कारण कृषि उत्पादकता में गिरावट आई। ऋण के बोझ तले कृषकों के रहन-सहन के स्तर एवं कृषि के सामर्थ्य में निरंतर गिरावट आई।

अंतत: निष्कर्षस्वरूप यह कहा जा सकता है कि अंग्रेज़ी शासनकाल में ग्रामीण ऋणग्रस्तता की जो स्थिति उत्पन्न हुई और उसमें लगातार वृद्धि हुई, उसने देश की अर्थव्यवस्था के लिये कई प्रकार की समस्याओं को खड़ा कर दिया, जिससे स्वतंत्र भारत की सरकार को जूझना पड़ा।

**'भारत में 19वीं शताब्दी में सामाजिक-धार्मिक सुधारों की जो प्रक्रिया प्रारंभ हुई, वह औपनिवेशिक शासन की उपस्थिति का प्रभाव था, न कि पाश्चात्य सभ्यता के संपर्क से उत्पन्न सामाजिक प्रतिरोध।' विश्लेषण कीजिये। (250 शब्द) 15**

**'The process of socio-religious reforms that began in India in the 19th century was an effect of the presence of colonial rule, not the social resistance created due to contact with western civilization.' Analyze.**

**उत्तर:** 19वीं शताब्दी में भारतीय समाज धार्मिक अंधविश्वासों एवं सामाजिक कुरीतियों से जकड़ा हुआ था। हिंदू समाज बुराइयों, बर्बरता एवं अंधविश्वासों से ओतप्रोत था। भारत में उपनिवेशी शासन की स्थापना के पश्चात् देश में अंग्रेज़ी सभ्यता एवं संस्कृति के प्रसार हेतु सुनियोजित प्रयास किये गए। शहरीकरण तथा आधुनिकीकरण ने भी लोगों के विचारों को प्रभावित किया। इन नवीन विचारों के विक्षोभ ने भारतीय संस्कृति में प्रसार की भावना उत्पन्न की तथा ज्ञान का प्रसार हुआ, इसी क्रम में एक शिक्षित नवीन मध्य वर्ग का उदय हुआ जिसने समाज में फैली बुराइयों और औपनिवेशिक शासन के दुष्प्रभावों के विरोध में अपनी आवाज़ बुलंद की। इसी मध्य वर्ग ने आगे चलकर भारत में सामाजिक सुधार आंदोलन का नेतृत्व किया।

इन सामाजिक सुधार आंदोलनों के आरंभ होने के कारणों को लेकर इतिहासकारों के मध्य आज भी द्वंद्व की स्थिति बनी हुई है। कुछ इतिहासकार जहाँ इसे पाश्चात्य प्रभाव के परिणामस्वरूप उत्पन्न सामाजिक प्रतिरोध मानते हैं तो वहीं कुछ इसे राष्ट्र में औपनिवेशिक हस्तक्षेप का जवाब समझते हैं। सुधार-आंदोलनों पर शुरू में लिखे गए इतिहास-ग्रंथों, जैसे- "मॉर्डन रिलीजियस मूवमेंट इन इंडिया" में पश्चिमी प्रभाव को ही पुनर्जागरण की उत्पत्ति का मुख्य कारण माना गया है। इस पुस्तक के

**उत्तरः** शोषणकारी ब्रिटिश हुकूमत के विरुद्ध चल रहे आंदोलनों के शुरुआती दौर में महिलाओं की भूमिका नाममात्र की थी, किंतु जनवरी, 1915 में दक्षिण अफ्रीका से गांधी जी के आगमन के बाद महिलाओं की सक्रिय भूमिका दिखाई देने लगी। इसका कारण माना जा सकता है महिला स्वभाव अनुकूल गांधी जी के विचारों, यथा- सत्य, अहिंसा, सत्याग्रह आदि की नीति को मान सकते हैं।

इसके अतिरिक्त एक कारण वस्तुतः स्वयं का हो रहा शोषण एवं अपने अधिकारों के प्रति सचेतता। शिक्षा का प्रसार तथा भारत में हुए सामाजिक-धार्मिक सुधार आंदोलनों की महती भूमिका भी रही।

***भारत में क्रांतिकारी आंदोलनों के विकास में महिलाओं की भूमिका***

- सन् 1857 में ब्रिटिश राज द्वारा झांसी के क्षेत्र को 'हड़प एवं विलय' की नीति के तहत ब्रिटिश साम्राज्य में मिलाये जाने के विरुद्ध झांसी की रानी लक्ष्मीबाई ने संघर्ष छेड़ा। वहीं लखनऊ में हजरत महल द्वारा ब्रिटिश हुकूमत के विरुद्ध खोला गया मोर्चा अविस्मरणीय है।
- अखिल भारतीय संस्था के रूप में स्थापित कॉन्ग्रेस (1885) जैसी संस्था का प्रतिनिधित्व एवं कार्यों को संभालने में भी महिलाओं ने बढ़-चढ़ कर हिस्सा लिया। वस्तुतः यह दूसरी महिलाओं के लिये प्रेरणा स्रोत रहा यथा- एनी बेसेंट, सरोजिनी नायडू, कादंबिनी गांगुली (देश की पहली महिला स्नातक) आदि।
- एनी बेसेंट के नेतृत्व में चलाया गया होमरुल आंदोलन स्वशासन की मांग करता था।
- सन् 1919 में महिला मताधिकार की मांग- एनी बेसेंट, सरोजिनी नायडू एवं श्रीमती हीराबाई टाटा द्वारा की गई।
- सरोजिनी नायडू के नेतृत्व में असहयोग आंदोलन के दौरान 'राष्ट्रीय स्त्री संघ' की स्थापना।
- क्रांतिकारी आंदोलन के दौर में शांति घोष, वीना दास, प्रीतीलता वाडेदर आदि महिलाओं द्वारा सक्रिय क्रांतिकारी गतिविधियाँ संचालित की गईं।
- वहीं लीला नाग नामक महिला द्वारा 'दीपावली संघ' की स्थापना की गई, जो महिलाओं को बम बनाने और शस्त्र चालने का प्रशिक्षण संबंधी कार्य करता था।
- 1942 में उषा मेहता द्वारा गुप्त रेडियो का संचालन।
- इंदिरा गांधी के नेतृत्व में 'वानरी सेना' का गठन।
- गांधी जी की गिरफ्तारी के बाद उनकी धर्मपत्नी कस्तूरबा के द्वारा आंदोलन में सक्रिय भूमिका निभाना आदि।

इस प्रकार भारत में आजादी के प्राप्ति के राह में आने वाले हर मुश्किल घड़ी एवं चुनौतियों का सामना पुरुष आंदोलनकारियों के साथ सक्रिय महिला आंदोलनकारियों ने भी किया।

## आधुनिक भारत का इतिहास (स्वतंत्रता के पश्चात्)

**स्वतंत्रता पश्चात् भारतीय नेतृत्व द्वारा गुटनिरपेक्षता को विदेश नीति का साधन तथा लक्ष्य-दोनों, एक साथ मान लेना एक गंभीर भूल थी। समालोचनात्मक टिप्पणी कीजिये। (250 शब्द) 15**

**It was a grave mistake by the Indian leadership after independence to recognize non-alignment as both the means and the end of foreign policy. Critically comment.**

**उत्तरः** 'फोंटाना डिक्शनरी ऑफ मॉडर्न थॉट' के अनुसार गुटनिरपेक्षता का अर्थ, "शीतयुद्ध की स्थिति में दो परस्पर विरोधी मुख्य शक्तिसमूहों में से किसी का भी पक्ष लेने से इनकार करना है।" गुटनिरपेक्षता की अवधारणा तटस्थता की अपेक्षा कम अलगाववादी थी और ये द्विध्रुवीयता को खुले सैनिक संघर्ष में बदलने से रोकने हेतु किये जाने वाले सामूहिक हस्तक्षेप की धारणा से जुड़ी हुई थी। भारत एवं अन्य नवस्वतंत्र देशों ने 1950 के दशक में अपने राष्ट्र को गुटीय राजनीति से दूर रखने एवं पारस्परिक सहयोग की भावना के विकास हेतु इस अवधारणा को अपनी विदेश नीति में शामिल किया।

किंतु, अनेक विद्वानों का मत है कि स्वतंत्रता पश्चात् भारतीय नेतृत्व का यह मान लेना कि गुटनिरपेक्षता भारतीय विदेश नीति की आधारशिला है तथा उसका किसी भी परिस्थिति में परित्याग नहीं किया जा सकता, आत्मघाती था। उनके अनुसार परिस्थितियों को ध्यान में रखकर गुटनिरपेक्षता के प्रति विभिन्न दृष्टिकोणों को अपनाया जाना अधिक युक्तिसंगत साबित हो सकता था। विद्वानों के इस मत के पीछे निम्न तर्क हैं-

- प्रारंभिक वर्षों (1947-50) में भारत की गुटनिरपेक्षता की नीति अस्पष्ट रही। इस समय भारत का झुकाव पश्चिमी गुट की तरफ था। पश्चिमी शिक्षा प्रणाली का प्रभाव, ब्रिटिश बाज़ार की अर्थव्यवस्था को कायम रखने का निर्णय, देश की सेनाओं पर ब्रिटिश निरीक्षण तथा तकनीकी एवं आर्थिक सहायता की ज़रूरतों इत्यादि ने भारत की पश्चिमी देशों पर निर्भरता को बढ़ा दिया था। इसी निर्भरता के कारण भारत ने पश्चिमी जर्मनी को अपनी मान्यता प्रदान की, लेकिन पूर्वी जर्मनी को नहीं। कोरिया युद्ध (1952-53) में भी भारत ने पश्चिमी देशों का समर्थन करते हुए उत्तर कोरिया को आक्रामक घोषित कर दिया।
- स्टालिन की मृत्यु के बाद भारत के प्रति सोवियत दृष्टिकोण काफी उदार हो गया था, जिसके फलस्वरूप भारत की सोवियत संघ से निकटता में वृद्धि होने लगी। 1954 की पाकिस्तान-अमेरिका संधि के अनुसार अमेरिका द्वारा पाकिस्तान को बड़े पैमाने पर हथियार उपलब्ध कराने तथा गोवा के प्रश्न पर पुर्तगाल का समर्थन करने के कारण भारत और अमेरिका के संबंधों में कटुता पैदा होना स्वाभाविक था। रूस ने भारत के भिलाई इस्पात कारखाने हेतु आर्थिक एवं तकनीकी सहायता प्रदान की। 1956 में स्वेज़ नहर मामले में भारत ने रूस का समर्थन करते हुए फ्राँस और ब्रिटेन द्वारा मिस्र पर आक्रमण करने की निंदा की। 1955 में हंगरी के मामले में भी भारत ने रूस का समर्थन किया।

**Indian Independence movement would have remained restricted to some sections only without Mahatma Gandhi and the commencement of a democratic system would not have become a possibility. Examine the statement.**

**उत्तर :** महात्मा गांधी का भारतीय स्वाधीनता आंदोलन में सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है। गांधीजी वास्तव में भारत के पहले राष्ट्रवादी नेता थे, जिन्होंने जीवन एवं जीवन पद्धति को साधारण एवं भारतीय आम नागरिक से एकाकार कर लिया था।

उल्लेखनीय है कि गांधीजी से पूर्व उदारवादी राजनेताओं की पहुँच 'मध्यम वर्ग' तक ही सीमित थी। तो वहीं 'उग्रवादी विचारधारा' में सामने वाली शक्ति को पराजित करने की मानसिकता के कारण हिंसा का स्थान था, जो इस धारा के विस्तार को सीमित कर रहा था।

गांधीजी ने 'साधन की पवित्रता' पर बल देकर 'जनशक्ति' को 'नैतिक शक्ति' से युक्त करके ब्रिटिश साम्राज्यवादी शक्ति के सामने खड़ा किया; तो वहीं 'वर्ग समन्वय' से हिंदू-मुस्लिम एकता, अस्पृश्यता व छुआछूत की समाप्ति, किसानों एवं पूंजीपतियों की सक्रिय भागीदारी का प्रयास किया। इसके अलावा, गांधीजी की 'अहिंसा' की अवधारणा ने महिलाओं एवं बच्चों की भूमिका को सक्रिय रूप से बढ़ाया। इस प्रकार, गांधीजी के अभाव में स्वतंत्रता संग्राम कुछ वर्गों व समुदायों तक सिमटकर रह जाता।

गांधीजी के इन्हीं मूल्यों व आदर्शों के कारण तथा स्वाधीनता आंदोलन में सभी वर्गों एवं समुदायों की भागीदारी के कारण ही भारत में लोकतांत्रिक व्यवस्था का सूत्रपात हुआ। सभी वर्गों एवं समुदायों की भागीदारी के अभाव में देश में लोकतांत्रिक व्यवस्था की स्थापना संभव नहीं थी। गांधीजी की सर्वोदय की अवधारणा, अहिंसा एवं शांति, वर्ग समन्वय जैसे मूल्यों को भारतीय संविधान एवं स्वतंत्रता पश्चात् देश की नीतियों में स्थान दिया गया।

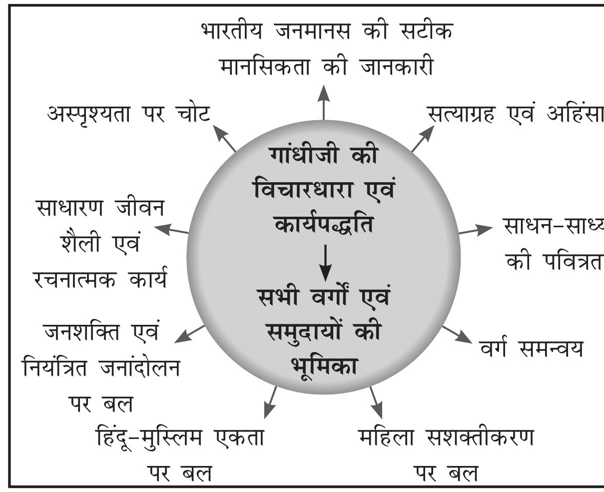


**निष्कर्षत:** भारतीय स्वाधीनता आंदोलन को सर्वसमावेशी बनाने एवं अहिंसक रूप प्रदान करने में महात्मा गांधी की उल्लेखनीय भूमिका रही है। जिसके परिणामस्वरूप स्वतंत्रता पश्चात् भारत में लोकतांत्रिक शासन की जड़ें और अधिक मज़बूत होती गई हैं और आज भारत विश्व का सबसे बड़ा एवं सफल लोकतांत्रिक देश है।

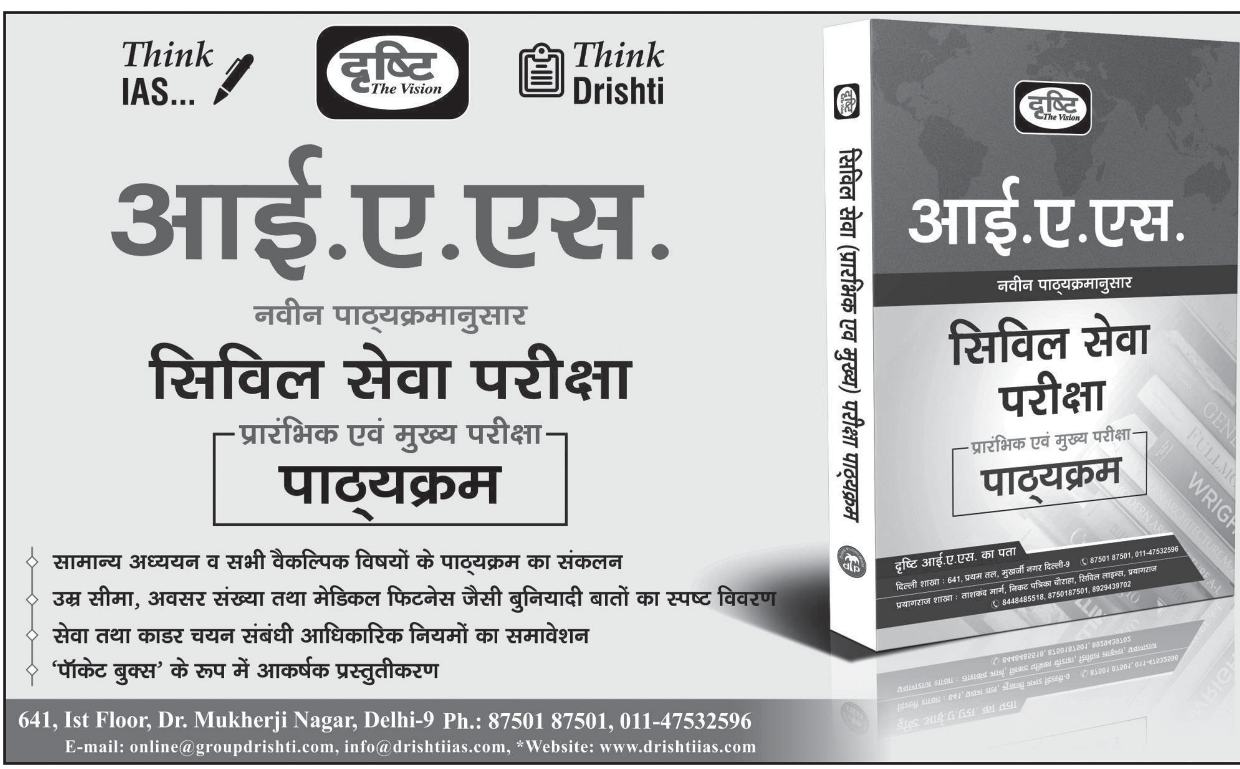

## विश्व इतिहास

**क्या आप इस मत से सहमत हैं कि औद्योगिक क्रांति ही वह एक प्रमुख कारण था, जिसने 19वीं सदी के विश्व में औपनिवेशिक प्रतिस्पर्द्धा का मार्ग प्रशस्त किया? तर्कसंगत चर्चा कीजिये। (250 शब्द ) 15**

**Do you agree with the view that the Industrial Revolution was the main reason that paved way for colonial competition in the 19th century world? Discuss.**

**उत्तर:** अठारहवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में आर्थिक और तकनीकी क्षेत्र में परिवर्तन ने समाज की सोच में भी परिवर्तन किया। कारखाना पद्धति घरेलू उत्पादन प्रणाली को प्रतिस्थापित करने लगी। शक्ति चालित मशीनों का अधिकाधिक उपयोग प्रारंभ हुआ और आधुनिक व्यापार तंत्र का विकास हुआ। इसके फलस्वरूप व्यापार में अप्रत्याशित वृद्धि हुई। इन्हीं व्यापक परिवर्तनों को इंगित करने के लिये 'औद्योगिक क्रांति' शब्द का प्रयोग किया गया, जबकि उपनिवेशवाद से आशय किसी प्रभुत्वशाली देश द्वारा अपने आर्थिक और राजनीतिक हितों की पूर्ति हेतु अन्य कमज़ोर देशों को अपने अधीन करने से है।

19वीं शताब्दी के दौरान उपनिवेशवाद ने नाटकीय रूप से विश्व को परिवर्तित किया। समस्त विश्व में, विशेषकर यूरोप के वे देश, जहाँ औद्योगिक क्रांति संपन्न हो चुकी थी, औपनिवेशिक प्रतिस्पर्द्धा में शामिल हो गए। औद्योगिक क्रांति और पूंजीवाद द्वारा सृजित मांगों ने एक आक्रामक उपनिवेशवाद नीति का मार्ग प्रशस्त किया, जो आर्थिक आवश्यकताओं से प्रेरित था। कारखानों द्वारा उत्पादित वस्तुओं के क्रय करने हेतु नए बाज़ारों, अधिशेष पूंजी के निवेश के लिये गंतव्य स्थान और कच्चे माल (भारत और मिस्र से कपास) के आपूर्तिकर्त्ताओं के रूप में उपनिवेशों की आवश्यकता थी। अत: एशिया और अफ्रीका के कमज़ोर देश इन यूरोपीय देशों के उपनिवेश में परिवर्तित हो गए। इस प्रकार समकालीन विश्व में औपनिवेशिक प्रतिस्पर्द्धा को बढ़ाने में औद्योगिक क्रांति की प्रत्यक्ष भूमिका रही।

हालाँकि, इस प्रतिस्पर्द्धा के मूल में औद्योगिक क्रांति ही एकमात्र कारण नहीं था, अपितु अन्य कारणों ने भी इसमें अपनी भूमिका निभाई। जो निम्न हैं-

- 19वीं शताब्दी में औद्योगीकरण के विस्तार के साथ ही यूरोप के देशों में जनसंख्या वृद्धि हुई। ब्रिटेन एवं स्कैंडेनेवियाई देशों में आबादी वृद्धि दर औसत से उच्च रही। अतिरिक्त जनसंख्या को रोज़गार देने तथा बसाने के क्रम में उपनिवेशों पर अधिकार को बढ़ावा मिला।
- साहसी व्यक्तियों तथा खोजकर्त्ताओं के कार्यों से भी उपनिवेशवाद को बढ़ावा मिला। कुछ प्रशासकों तथा सैनिक प्रमुखों ने भी उपनिवेश स्थापना को राष्ट्रीय दायित्व मानकर लगन एवं निष्ठा से इसे पूरा करने का प्रयास किया। विशेषकर अफ्रीकी महाद्वीप पर यूरोप के साम्राज्यवाद की स्थापना में साहसी खोजकर्त्ताओं की भूमिका अत्यंत महत्त्वपूर्ण है।
- आर्थिक उद्देश्यों को गतिशील तथा त्वरित बनाने में राष्ट्रीयता की भावना निर्णायक रही। 19वीं सदी में यूरोप के देशों में अनेक राष्ट्रवादी राजनीतिज्ञ, लेखक, विचारक एवं अर्थशास्त्री हुए जिन्होंने राष्ट्रीय गौरव, राष्ट्रीय सुरक्षा तथा आत्मनिर्भरता की दृष्टि से उपनिवेशवाद को निरंतर प्रोत्साहित किया।
- ईसाई धर्म का प्रसार करने एवं पश्चिमी संस्कृति को विस्तारित करने में ईसाई मिशनरियों की भूमिका अहम रही। इंग्लैंड के डॉक्टर लिविंगस्टोन ने 20 वर्षों तक अफ्रीका के आंतरिक प्रदेशों तथा कांगो नदी घाटी के क्षेत्रों की खोज की।
- उन्नत तकनीक एवं मेडिकल ज्ञान के सतत् विकास से साम्राज्यवाद की प्रक्रिया आसान हो गई। इससे यूरोपवासियों का एशिया तथा अफ्रीका में स्थायी निवास संभव हुआ। स्टीमबोट, टेलीग्राफ और बंदूक के विकास से यूरोपीय शक्तियों को उपनिवेशों में शासन के विस्तार एवं विद्रोह के दमन में सफलता मिली।
- परिवहन और संचार में सुधार भी एक प्रमुख कारण था, उदाहरण के लिये- वाष्प-शक्ति चालित जहाज़ों, रेलमार्गों, जलमार्गों आदि ने एक देश से दूसरे देश में कच्चे माल और तैयार माल की आवाजाही को सुगम बनाया।
- इसके अतिरिक्त, एशिया और अफ्रीका की राजनीतिक, सैन्य, आर्थिक एवं सामाजिक संरचना में निहित कमज़ोरियों ने भी उनकी औपनिवेशिक विजय को सक्षम बनाया।

सारांशत: हम कह सकते हैं कि 19वीं सदी के विश्व में उपनिवेशवाद के तीव्र प्रसार में औद्योगिक क्रांति ने महत्त्वपूर्ण भूमिका अवश्य निभाई, किंतु अन्य कारणों ने भी इसके आधार को तैयार करने में अपना योगदान दिया।

**18वीं सदी के फ्रांँस के यूरोप के सर्वाधिक अग्रगण्य राज्य होने के बावजूद वे कौन-सी विशिष्टताएँ थीं जिन्होंने 1789 की क्रांति का सूत्रपात किया? विवेचना कीजिये। (150 शब्द) 10**

**The 18th century France being the most prominent state of Europe notwithstanding, what distinct characteristics ushered in the Revolution of 1789? Discuss.**

**उत्तर :** 18वीं सदी के दौरान फ्रांँस संपूर्ण यूरोप का सर्वाधिक अग्रगण्य राज्य था क्योंकि राजनीतिक, आर्थिक और सैन्य के साथ-साथ बौद्धिक स्तर पर फ्रांँस की स्थिति अत्यंत सुदृढ़ थी। फ्रांँस की इसी विशिष्टता ने 1789 की क्रांति को प्रेरित किया।

फ्रांँस क्रमिक आर्थिक विकास के पथ पर अग्रसर था अर्थात् कृषि के क्षेत्र में प्रगति के साथ दक्षता में भी वृद्धि हो रही थी, वहीं फ्रांँस की सेना सुव्यवस्थित एवं अनुशासित थी। फ्रांँस में कलाकारों, शिल्पकारों, गणितज्ञों, वैज्ञानिकों एवं साहित्य के रचनाकारों की उपस्थिति ने बौद्धिक स्तर पर फ्रांँस को सशक्त बना दिया था।

# खंड-2

## भारतीय समाज एवं सामाजिक मुद्दे

**बहु-सांस्कृतिक भारतीय समाज को समझने में क्या जाति की प्रासंगिकता समाप्त हो गई है? उदाहरणों सहित विस्तृत उत्तर दीजिये। (150 शब्द, 10 अंक)**

**Has caste lost its relevance in understanding the multi-cultural Indian Society? Elaborate your answer with illustrations.**

**उत्तर:** जाति व्यवस्था भारतीय समाज का आधारभूत लक्षण है। पिछले कुछ दशकों में भारतीय समाज में जाति व्यवस्था अपने परंपरागत स्वरूप में कमज़ोर अवश्य हुई है किन्तु यह समाप्त होने की अपेक्षा संक्रमण काल से गुज़र रहे भारतीय समाज के साथ नए सन्दर्भों में पहचान स्थापित करने का प्रयास कर रही है। इसे निम्नलिखित बिंदुओं में देखा जा सकता है-

- संविधान में अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति और पिछड़े वर्ग के लिये शिक्षा और रोज़गार के अवसरों में आरक्षण का प्रावधान है। इससे पिछले 7 दशकों में कुछ उपेक्षित और पिछड़ी जातियों का समाज में वर्चस्व बढ़ा है तो वहीं पूर्व मे आर्थिक और सामाजिक रूप से वर्चस्वशाली रही जातियों का प्रभाव सीमित हुआ है। इसके फलस्वरूप जातिगत आधार पर आरक्षण के लिये नए आंदोलनों का उदय हुआ है, जैसे-जाट, पाटीदार और मराठा जातियों द्वारा आंदोलन।
- विभिन्न वर्गों में जातिगत सजगता मज़बूत हो रही है। इसे शहरी क्षेत्रों में स्थापित जातिगत संगठनों, जैसे-ब्राह्मण महासभा, अग्रवाल महासभा इत्यादि की स्थापना के रूप में देखा जा सकता है।
- जातियों के आधार पर प्रचलित विभिन्न रीति-रिवाजों, जैसे- ब्राह्मणों में जनेऊ संस्कार, क्षत्रियों में शस्त्र पूजा इत्यादि का प्रचलन।
- वर्तमान में समाचार पत्रों और वेबसाइट्स पर वैवाहिक विज्ञापन में जातिगत पहचान के आधार पर वैवाहिक रिश्तों को प्राथमिकता।
- राजनीतिक दलों द्वारा जातिगत आधार पर दल में पदों और चुनाव टिकट का वितरण तथा विशेष जाति समूह के आधार पर राजनीतिक दलों की पहचान। उदाहरण के लिये उत्तर प्रदेश और बिहार में जातिगत आधार पर दलों की उपस्थिति।

यह सत्य है कि संस्कृतीकरण, पश्चिमीकरण, अंतर-जातीय विवाह में वृद्धि, ग्रामीण क्षेत्रों से शहरों में पलायन, मध्यवर्ग के उदय जैसे कारकों के प्रभाव में जाति व्यवस्था शिथिल हुई है किन्तु उपर्युक्त विवेचना से स्पष्ट है वर्तमान में भी जाति की प्रासंगिकता नए स्वरूप में बनी हुई है। वास्तव में वैश्वीकरण और शहरीकरण के प्रभाव में भारतीय समाज में जाति व्यवस्था संक्रमण के दौर से गुज़र रही है तथा जातियों का आर्थिक स्थितियों के अनुसार वर्गों में विभाजन हो रहा है।

**कोविड-19 महामारी ने भारत में वर्ग असमानताओं एवं ग़रीबी को गति दे दी है। टिप्पणी कीजिये। (150 शब्द, 10 अंक)**

**COVID-19 pandemic accelerated class inequalities and poverty in India. Comment.**

**उत्तर:** विश्व बैंक की रिपोर्ट के अनुसार कोविड-19 के कारण 20 वर्षों में पहली बार गरीबी के स्तर में वृद्धि हो सकती है। मध्यम-आय वाले भारत जैसे देश में उच्च गरीबी का सामना कर रही जनसंख्या की आर्थिक स्थिति बिगड़ने से एक ओर जहाँ वर्गीय असमानता में वृद्धि हो सकती है तो वहीं दूसरी ओर 'नए गरीब' वर्ग का उदय भी हो सकता है। वर्ष 2006 से 2016 के मध्य भारत ने 271 मिलियन लोगों को बहुस्तरीय गरीबी रेखा के स्तर से बाहर निकाला है। किन्तु कोविड के कारण धीमी पड़ी अर्थव्यवस्था और लॉकडाउन का अनौपचारिक क्षेत्र पर सबसे गंभीर प्रभाव पड़ा है जिस पर प्रवासी श्रमिकों और रेहड़ी-पटरी वालों सहित 85 प्रतिशत कार्यबल निर्भर है। दरअसल शहरी क्षेत्रों में कार्यरत रेहड़ी-पटरी वाले सामाजिक संरक्षण के अभाव और ऑनलाइन शॉपिंग के बढ़ते प्रचलन के कारण पहले से ही आर्थिक संकट का सामना कर रहे हैं। ऐसे में कोविड के कारण संकुचित अर्थव्यवस्था ने इनकी सुभेद्यता को अधिक बढ़ा दिया है। इसी तरह लॉकडाउन के दौरान आय के आभाव में लाखों की संख्या में प्रवासी श्रमिकों का ग्रामीण क्षेत्रों में पलायन हुआ है। जिससे ग्रामीण क्षेत्रों में कृषि पर निर्भर जनसंख्या बढ़ रही है। इस प्रकार शहरी क्षेत्रों में आर्थिक गतिविधि बाधित होने से नए गरीब वर्ग का उदय हो रहा है।

कोविड के दौरान लॉकडाउन में एक ओर तो महिलाओं की रोज़गार में भागीदारी कम हुई है तो दूसरी ओर उनके अवैतनिक कार्य (पारिवारिक दायित्व) में प्रतिदिन 5 घंटे की वृद्धि हुई है। इसी तरह इस दौरान डिजिटल माध्यम से शिक्षा का प्रचलन बढ़ा है किन्तु देश में मात्र 25 प्रतिशत परिवारों के पास ही इंटरनेट कनेक्टिविटी की सुविधा उपलब्ध है जिससे एक बड़ा तबका शिक्षा से वंचित हो गया है। इस प्रकार लैंगिक और शैक्षणिक स्तर पर असमानता में वृद्धि हुई है।

कोविड के कारण गतिशील हुई असमनता और गरीबी ने समावेशी विकास लक्ष्यों के मार्ग में विचलन उत्पन्न कर दिया है जिससे निपटने के लिये पीएम स्वनिधि, पीएम ई-विद्या, दीक्षा, गरीब कल्याण योजना और आत्मनिर्भर भारत जैसे कार्यक्रम प्रारम्भ किये गए हैं।

**क्या आप सहमत हैं कि भारत में क्षेत्रीयता बढ़ती हुई सांस्कृतिक मुखरता का परिणाम प्रतीत होती है? तर्क कीजिये। (150 शब्द, 10 अंक)**

**Do you agree that regionalism in India appears to be a consequence of rising cultural assertiveness? Argue.**

**उत्तर:** किसी राज्य अथवा क्षेत्र पर सांस्कृतिक वर्चस्व व भेदभावमूलक व्यवहार क्षेत्रीयतावाद को उत्पन्न करता है। लेकिन केवल सांस्कृतिक मुखरता ही क्षेत्रीयतावाद का एकमात्र कारण नहीं है।

# खंड-3

## भारत एवं विश्व का भूगोल

**परिप्रशांत क्षेत्र के भू-भौतिकीय अभिलक्षणों का विवेचन कीजिये। (150 शब्द, 10 अंक)**

**Discuss the geophysical characteristics of Circum-Pacific Zone.**

**उत्तर:** परिप्रशांत क्षेत्र प्रशांत महासागर में भूकंप और ज्वालामुखी प्रभावित लगभग 40,000 किमी. के क्षेत्र में 'घोड़े की नाल' के आकार में फैला एक विस्तृत क्षेत्र है, जिसे 'अग्नि वलय' (Ring to Fire) के नाम से भी जाना जाता है। विश्व के अधिकांश भूकंप एवं ज्वालामुखी (सक्रिय एवं सुषुप्त) इसी क्षेत्र में आते हैं, जो प्रशांत महासागर के पूर्वी एवं पश्चिमी दोनों किनारों पर अवस्थित है।

प्रशांत महासागरीय प्लेट के अंतर्गत स्थित यह क्षेत्र अभिसारी प्लेट सीमा से संबंधित है, जहाँ इसका अभिसरण महासागरीय एवं महाद्वीपीय प्लेटों से होता है। महाद्वीपीय प्लेट के अंतर्गत उत्तरी एवं दक्षिणी अमेरिकन प्लेट, अंटार्कटिक प्लेट, भारतीय प्लेट तथा महासागरीय प्लेट के अंतर्गत फिलीपाइंस प्लेट तथा कोकोस प्लेटों से प्रशांत महासागरीय प्लेट की सीमा पाई जाती है।

उपर्युक्त स्थिति में महासागरीय एवं महाद्वीपीय प्लेटों के टक्कर से संबंधित अभिसारी प्लेट सीमांत पर जहाँ प्लेटों की आपसी टक्कर से महासागरीय (प्रशांत महासागरीय) प्लेट का गहराई में क्षेपण होता है, वहीं क्षेपित प्लेट के तापमान में वृद्धि से भूपर्पटी (क्रस्ट) का आंशिक गलन होने के कारण मैग्मा का निर्माण होता है। यही मैग्मा जब पृथ्वी की आंतरिक परतों को तोड़ते हुए सतह पर आता है तो ज्वालामुखी क्रिया होती है। वहीं महासागरीय प्लेटों के क्षेपण के बाद भूकंप की उत्पत्ति होती है।

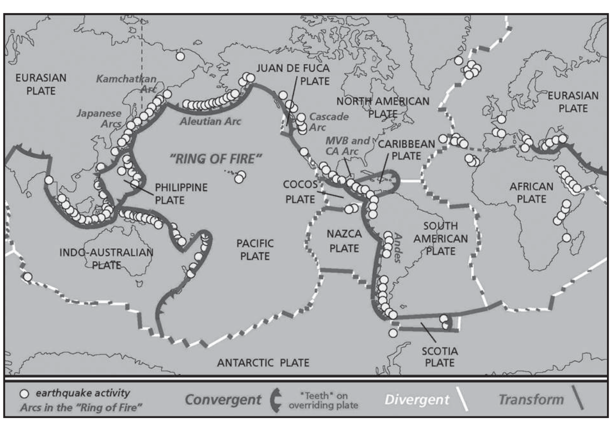


वस्तुत: भूकंप एवं ज्वालामुखीयता से प्रभावित यह क्षेत्र प्लेटों के अभिसरण, भ्रंशन आदि से संबंधित है। वर्तमान में इस क्षेत्र में बड़ी मात्रा में गतिविधियाँ देखी गई हैं जो सुनामी, ज्वालामुखी, भूकंप आदि के रूप में उभरकर आयी हैं।

**मरुस्थलीकरण के प्रक्रम की जलवायविक सीमाएँ नहीं होती हैं। उदाहरणों सहित औचित्य सिद्ध कीजिये। (150 शब्द, 10 अंक)**

**The process of desertification does not have climatic boundaries. Justify with examples.**

**उत्तर:** मरुस्थलीकरण एक ऐसी भौगोलिक प्रक्रिया है, जिसमें उर्वर भूमि मरुस्थलीय भूमि में विकसित होने लगती है। इसमें जलवायु परिवर्तन तथा मानवीय गतिविधियों समेत अन्य कारणों से शुष्क, अर्द्ध शुष्क, निर्जल इलाकों की ज़मीन रेगिस्तान में परिवर्तित हो जाती है जिससे भूमि की उत्पादन क्षमता में ह्रास होता है। मरुस्थलीकरण से प्राकृतिक वनस्पतियों का क्षरण तो होता ही है, साथ ही कृषि उत्पादकता, पशुधन एवं जलवायवीय घटनाएँ भी प्रभावित होती हैं। सूखा, तापमान में वृद्धि, वर्षा का न होना आदि प्राकृतिक कारणों के अतिरिक्त मानवजनित कारक भी मरुस्थलीकरण की प्रक्रिया को तीव्र करने में उत्तरदायी हैं।

अनुकूल जलवायविक दशाओं के पाए जाने पर भी यद्यपि कुछ क्षेत्र ऐसे भी हैं जो मरुस्थल के रूप में परिवर्तित हो रहे हैं, जिसके लिये मानवीय कारक उत्तरदायी हैं। जो निम्नलिखित हैं–

- मरुस्थलीकरण के प्रमुख कारणों में अतिचराई प्रमुख कारण है। परती भूमि में पशुओं द्वारा पौधों को चरने के कारण भूमि बंजरता में वृद्धि हुई है।
- शहरी जीवनशैली, औद्योगीकरण के कारण, मकान एवं फैक्ट्रियों की प्रतिस्पर्धा के कारण वनों का संकुचन एवं मैदानों की अनुपलब्धता भी प्रमुख कारण है।
- खनन कार्यों, खुदाई से निकले मलबों को वैसे ही छोड़ देने पर भूमि की उर्वरता पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है तथा कृषि योग्य भूमि की उत्पादकता निम्न हो जाती है।
- उर्वरकों, कीटनाशकों का अत्यधिक प्रयोग, ट्रैक्टरों द्वारा गहरी जुताई, अनुपयुक्त सिंचाई पद्धति, रेतीले पहाड़ी ढलानों में कृषि आदि से मरुस्थलीकरण की क्रिया तेज़ होती है।
- वन अपरोपण, भूमि उपयोग प्रतिरूप में परिवर्तन तथा मानवीय कारणों से जलवायु परिवर्तन में वृद्धि, जनसंख्या दबाव आदि के कारण मरुस्थलों में विस्तार पाया जाता है।

उदाहरण के तौर-पर साहेल क्षेत्र, जो पश्चिमी और उत्तर-मध्य अफ्रीका का एक अर्द्ध-शुष्क क्षेत्र है, मरुस्थलीय क्षेत्र का निर्माण करता है जिसका प्रमुख कारण मानवीय गतिविधियाँ हैं। वहीं संयुक्त राज्य अमेरिका का टेक्सास, एरिजोना, न्यूमेक्सिको भी मरुस्थलीकरण प्रभावित क्षेत्र है। भारत के संदर्भ में राजस्थान, गुजरात, पंजाब, हरियाणा, दक्षिण भारत का वृष्टि छाया प्रदेश तथा पश्चिम उत्तर प्रदेश आदि क्षेत्र मरुस्थल प्रभावित हैं। जिसका कारण एक फसलीय कृषि पद्धति, निर्वनीकरण, अतिपशुचारण, उर्वरकों, कीटनाशकों का अत्यधिक प्रयोग, जल प्रबंधन का अभाव जैसे चंबल क्षेत्र आदि हैं।

धारवाड़ संरचना का सर्वाधिक विकास कर्नाटक के धारवाड़ क्षेत्र में हुआ है। इसके अतिरिक्त छोटानागपुर पठार, अरावली पर्वतीय क्षेत्र, मेघालय पठार तथा हिमालय के पदीय क्षेत्रों– लद्दाख, जास्कर तथा गढ़वाल व कुमाऊँ श्रेणी आदि में हुआ है।

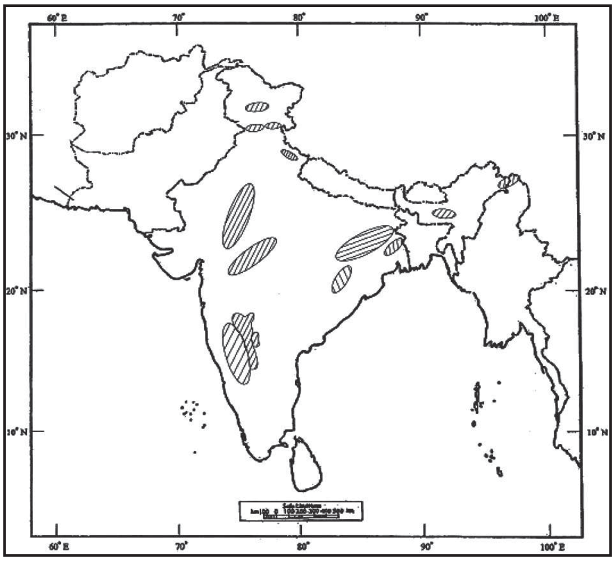

धारवाड़ क्रम की चट्टानें सर्वाधिक प्राचीन अवसादी चट्टानें हैं जिनमें धात्विक एवं अधात्विक दोनों ही प्रकार के खनिजों का निक्षेप हुआ है। धात्विक खनिजों में लौह अयस्क, मैंगनीज़, सोना, चांदी, तांबा आदि के निक्षेप हैं तथा अधात्विक खनिजों में अभ्रक, डोलामाइट, स्लेट एवं शिस्ट जैसे खनिजों के निक्षेप हैं।

यह संरचना भारत में खनिजों की दृष्टि से अत्यधिक महत्त्वपूर्ण है। विश्व प्रसिद्ध कोलार (सोने) की खदान, चंपानेर की हरे मार्बल की खदान, बालाघाट एवं छिंदवाड़ा की प्रसिद्ध कॉपर खदान तथा सिंहभूमि, मयूरभंज एवं क्योंझर की प्रसिद्ध लौह खदानें धारवाड़ संरचना का ही भाग हैं जो इन क्षेत्रों में उद्योगों के विकास की दृष्टि से अत्यधिक महत्त्वपूर्ण हैं।

यह संरचना खनिजों की दृष्टि से संपन्न होते हुए भी वर्तमान में इस चट्टानी संस्तर के अत्यधिक गहराई में चले जाने के कारण इनका दोहन आसान नहीं है किंतु इसका भूगर्भिक महत्त्व अभी भी बना हुआ है।

**विश्व के प्रमुख वायुदाब कटिबंधों की संक्षिप्त चर्चा करते हुए यांत्रिकी जनित पेटियों की क्रियाविधि को स्पष्ट कीजिये। (150 शब्द) 10**

**Describing briefly the pressure belts on the surface of the Earth, explain the mechanism of dynamically induced pressure belts.**

**उत्तर :** धरातल या सागर तल के प्रति इकाई क्षेत्रफल पर वायुमंडल की समस्त परतों के पड़ने वाले भार को वायुदाब कहा जाता है। विश्व में अक्षांशीय वितरण के अनुसार उच्च वायुदाब और निम्न वायुदाब की सात पेटियाँ पाई जाती हैं। इनमें से दो विषुवतीय और ध्रुवीय पेटियाँ तापमान जनित तथा उपोष्ण एवं उपध्रुवीय यांत्रिकी जनित पेटियाँ हैं।

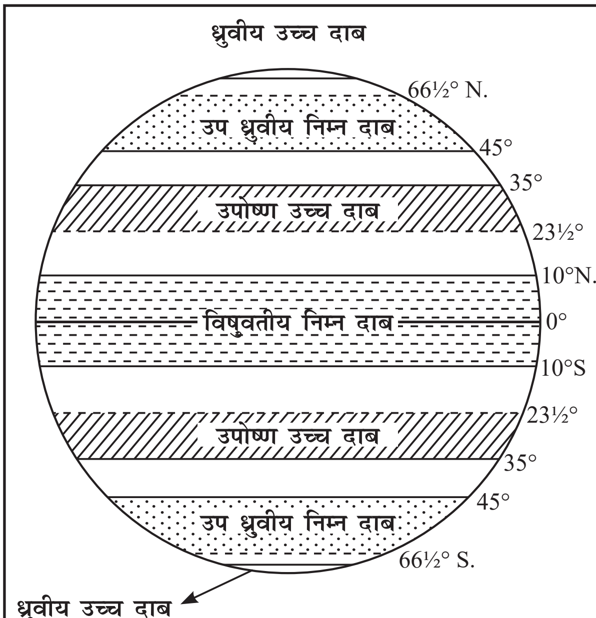


वायुदाब की पेटियाँ

विषुवतरेखीय क्षेत्र में अधिक तापमान के कारण संवहन तरंग के रूप में गर्म वायु के अवरोहण से निम्न वायुदाब का विकास होता है तथा ध्रुवीय प्रदेश में अत्यंत कम तापमान होने के कारण ठंडी वायु के अवरोहण से उच्च वायुदाब का विकास होता है।

उपोष्ण उच्च वायुदाब पेटी के विकास में पृथ्वी का घूर्णन उत्तरदायी होता है तथा उपध्रुवीय निम्न वायुदाब पेटी का विकास उपोष्ण एवं ध्रुवीय हवाओं के अभिसरण से होता है।

उपोष्ण कटिबंधीय उच्च वायुदाब पेटी तथा उपध्रुवीय निम्न वायुदाब पेटियों का निर्माण यांत्रिक गतियों के कारण होता है। विषुवतरेखीय क्षेत्र से जब वायु गर्म होकर ऊपर उठने के बाद ध्रुवों की ओर जाती है तब पृथ्वी के घूर्णन के द्वारा उत्पन्न अभिकेंद्रीय बल के प्रभाव से उपोष्ण कटिबंधीय क्षेत्र में अवरोहित होती है जिससे उच्च वायुदाब का विकास होता है। उपध्रुवीय क्षेत्र में ध्रुवीय उच्च वायुदाब और उपोष्ण उच्च वायुदाब से चलने वाली वायु का अभिसरण होता है जिस कारण वायु का आरोहण होता है तथा उपध्रुवीय निम्न वायुदाब का विकास होता है।

**पृथ्वी की आंतरिक संरचना संबंधी विभिन्न अध्ययनों की संक्षिप्त चर्चा करते हुए इनकी प्रामाणिकता की जाँच कीजिये। (150 शब्द) 10**

**Describing briefly the different studies related to Earth's interior structure, evaluate their authenticity.**

**उत्तर :** पृथ्वी की आंतरिक संरचना से संबंधित अध्ययन के अंतर्गत कई प्रकार के अध्ययन किये गए, जिसमें घनत्व आधारित, ताप आधारित, दाब आधारित तथा भूकंपीय तरंग आधारित अध्ययन प्रमुख हैं।

घनत्व आधारित अध्ययन के अंतर्गत पृथ्वी के औसत घनत्व ($5.5\ gm/cm^3$) तथा क्रस्ट के औसत घनत्व ($2.8\text{-}3.5\ gm/cm^3$) के द्वारा

## सागर से संबंधित कारक

सागरीय जल के तापमान, लवणता, घनत्व इत्यादि में स्थानीय कारकों के फलस्वरूप परिवर्तन होते रहते हैं, जिसके प्रभाव से धाराओं की उत्पत्ति होती है, जो निम्न हैं–

- पृथ्वी पर सूर्य ताप के वितरण में असमानता पाई जाती है। विषुवत रेखीय भागों में सूर्य की लंबवत् किरणों के कारण, जल का ताप अधिक होने के कारण जल का घनत्व कम होता है, जबकि ध्रुवीय क्षेत्रों में तापमान कम होने के कारण जल का घनत्व अधिक पाया जाता है। इससे जल अधिक घनत्व से कम घनत्व की ओर प्रवाहित होने लगता है व सागरीय धारा की उत्पत्ति होती है, उदाहरण के तौर पर लैब्राडोर धारा को लिया जा सकता है।
- लवणता से भी सागरीय धाराओं की उत्पत्ति होती है। लवणता से जल घनत्व में अंतर होने के कारण अधिक लवणयुक्त जल कम लवणयुक्त जल की ओर प्रवाहित होने लगता है।

## बाह्य सागरीय कारक

बाह्य सागरीय कारकों में वायुदाब, हवाएँ, वर्षा तथा वाष्पीकरण आते हैं। ये निम्नवत् हैं–

- जहाँ वायुमंडलीय दाब अधिक होता है, वहाँ सागरीय तल नीचे हो जाता है और जहाँ वायुमंडलीय दाब कम रहता है, वहाँ सागर तल उच्च रहता है। अतः जल का प्रवाह उच्च सागर तल से निम्न सागर तल की ओर गतिशील हो जाता है, इससे सागरीय धाराओं की उत्पत्ति होती है।
- प्रचलित/सनातनी (व्यापारिक, पछुआ व ध्रुवीय) पवनें सागरीय धाराओं की उत्पत्ति का मुख्य कारण हैं। प्रचलित पवनें अपने घर्षण बल के कारण जल को अपने प्रवाह की दिशा में बहा ले जाती हैं। इससे सागरीय धाराओं की उत्पत्ति होती है। उदाहरण के तौर पर उत्तर तथा दक्षिण अटलांटिक प्रवाह की उत्पत्ति सनातनी पवनों के कारण होती है।
- भू-घूर्णन : पृथ्वी के अपने अक्ष पर घूर्णन के कारण कोरियॉलिस बल उत्पन्न होता है। फेरेल के नियमानुसार, उत्तरी गोलार्द्ध में धाराएँ अपनी दाईं ओर तथा दक्षिणी गोलार्द्ध के धाराएँ अपनी बाईं ओर मुड़ जाती हैं।
- जिन भागों में वर्षा अधिक होती है तथा वाष्पीकरण कम होता है, वहाँ जल का तल ऊँचा होता है, जबकि निम्न वर्षा तथा उच्च वाष्पीकरण वाले क्षेत्रों में जल का तल निम्न होता है। इससे जल का प्रवाह उच्च जल के तल वाले क्षेत्र से निम्न जल के तल वाले क्षेत्र की ओर होता है व सागरीय धाराओं की उत्पत्ति होती है।

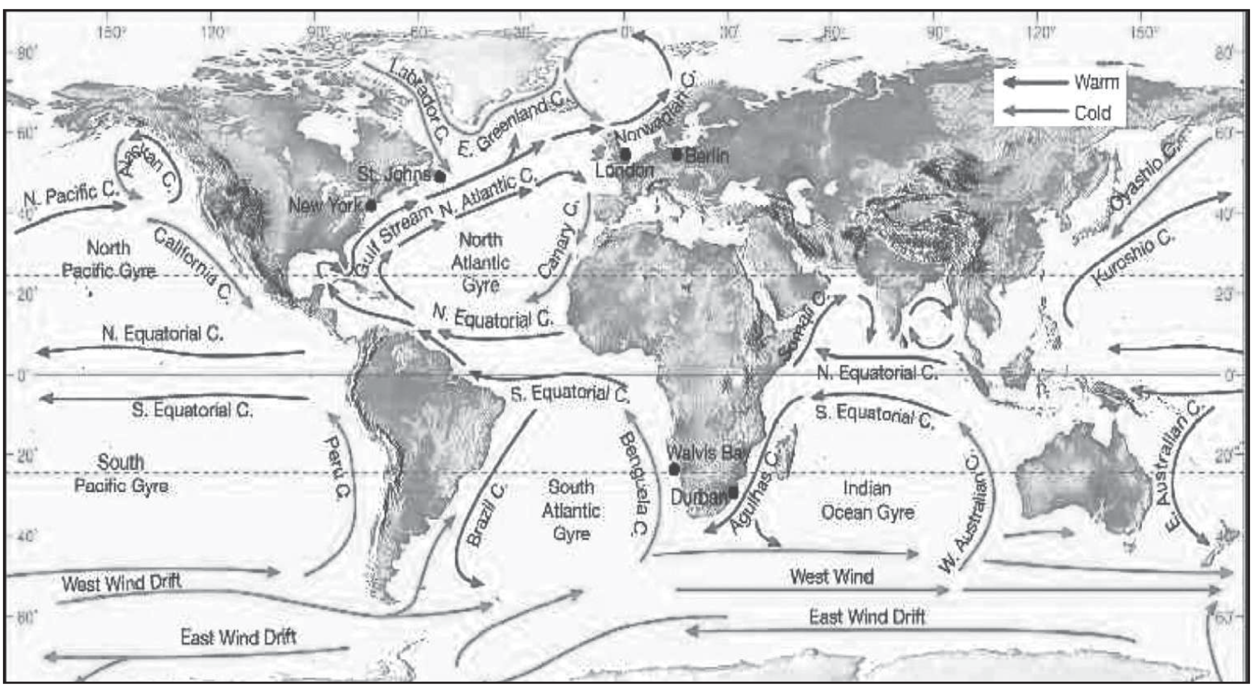


*विभिन्न प्रभावों से उत्पन्न महासागरीय धाराएँ*

## महासागरीय धाराओं का प्रभाव

महासागरीय धाराएँ अपनी उत्पत्ति के पश्चात् प्रादेशिक जलवायु, मानव जीवन तथा नौचालन पर व्यापक प्रभाव डालती हैं, जो निम्नवत हैं–

- ठंडी जलधाराएँ जिन धरातलीय भागों के पास से प्रवाहित होती हैं, वे वहाँ वर्षा पर प्रतिकूल प्रभाव डालती हैं। उदाहरण के तौर पर कालाहारी तथा अटाकामा मरुस्थलों के आविर्भाव में क्रमशः बेंगुला और पेरू ठंडी जलधाराओं का पर्याप्त योगदान है।
- गर्म जलधाराएँ जिन क्षेत्रों में प्रवाहित होती हैं, वहाँ वे वर्षा को प्रोत्साहित करती हैं। उदाहरणस्वरूप, जापान के पूर्वी भाग में क्यूरोशिओ धारा के कारण वर्षा होती है।
- गर्म जलधाराएँ उच्च अक्षांशों में समकारी जलवायु का निर्माण करती हैं। पश्चिमी यूरोपीय तुल्य जलवायु के निर्माण में उत्तरी अटलांटिक प्रवाह का योगदान महत्त्वपूर्ण है।

दृष्टि The Vision

# घर बैठे IAS/PCS की संपूर्ण तैयारी करने के लिये आपका स्वागत है

# Drishti Learning App

## पर

GET IT ON Google Play

**अपने एंड्रॉयड फोन पर आज ही इंस्टॉल करें**

## ऐप की विशेषताएँ

- टीम दृष्टि द्वारा दी जाने वाली सभी सुविधाएँ एक ही मंच पर।
- ऑनलाइन, पेनड्राइव मोड में कक्षाएँ उपलब्ध।
- प्रिलिम्स और मेन्स की टेस्ट सीरीज़ भी ऐप के माध्यम से उपलब्ध।
- सभी पुस्तकें, मैगजीन, डिस्टेंस लर्निंग प्रोग्राम के नोट्स देखने व मंगवाने की सुविधा।

## ऑनलाइन कोर्स की विशेषताएँ

- घर बैठे देश के सर्वोत्कृष्ट अध्यापकों से पढ़ने की सुविधा।
- अब दिल्ली या किसी बड़े शहर जाकर पढ़ने की मजबूरी नहीं।
- IAS और PCS के कोर्स उपलब्ध।
- ऑनलाइन कोर्स करने के बाद, क्लासरूम कोर्स में प्रवेश लेने पर शुल्क में विशेष छूट।
- हर क्लास अपनी सुविधा से 3 बार देखने की सुविधा।
- उत्तर लिखकर चेक कराने तथा संदेह-समाधान की व्यवस्था भी शीघ्र उपलब्ध।
- कई विषयों के कोर्स ऑनलाइन और पेनड्राइव मोड में भी उपलब्ध।

**दृष्टि आई.ए.एस. (दिल्ली शाखा) का पता**
641, प्रथम तल, डॉ. मुखर्जी नगर, दिल्ली-09
8448485519, 87501 87501, 011-47532596

**दृष्टि आई.ए.एस. (प्रयागराज शाखा) का पता**
ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज
8448485518, 8750187501, 8929439702

**दृष्टि आई.ए.एस. (राजस्थान शाखा) का पता**
प्लॉट नंबर-45 व 45-A, हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड़, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर राजस्थान-302018
8448485518, 8750187501, 8929439702

# दृष्टि पब्लिकेशन्स की प्रमुख पुस्तकें

641, 1st Floor, Dr. Mukherji Nagar, Delhi-9
Ph.: 011-47532596, 87501 87501
Website: www.drishtiias.com
E-mail: booksteam@groupdrishti.com

ISBN 978-81-950940-5-9
9 788195 094059

मूल्य : ₹ 270